ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor = 8.35, January-June 2026, Submitted in January 2026

# "मीरा के पदों में नारी चेतना और सामाजिक-राजनीतिक प्रतिरोध"

सरला, सहायक आचार्य, हिंदी, ज्योति महिला विद्यापीठ विश्वविद्यालय, जयपुर
निर्देशक - डॉ. रामकृष्ण शर्मा, हिंदी, ज्योति महिला विद्यापीठ विश्वविद्यालय, जयपुर
**ई मेल -** Sarlasaini2017@gmail.com

## सारांश

भक्ति आंदोलन भारतीय समाज में आध्यात्मिकता के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन का भी एक सशक्त माध्यम था। इस आंदोलन में जहां अधिकांश संतों ने भक्ति के माध्यम से सामाजिक समरसता का संदेश दिया, वहीं मीरा बाई ने एक स्त्री होते हुए न केवल ईश्वर-भक्ति का मार्ग चुना बल्कि अपने जीवन और काव्य के माध्यम से पितृसत्ता, सामाजिक रूढ़ियों और राजसत्ता के विरुद्ध प्रतिरोध की मुखर अभिव्यक्ति भी की। मीरा का काव्य केवल आध्यात्मिक उत्कटता का दर्पण नहीं, बल्कि स्त्री के स्वाधिकार और स्वतंत्र व्यक्तित्व की घोषणा भी है।
मीरा ने राजपरिवार की मर्यादाओं, पति-निष्ठा के बंधनों और कुल मर्यादा के नाम पर स्त्री को नियंत्रित करने वाली परंपराओं को अस्वीकार करते हुए कहा – *" मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई"*। यह केवल भक्ति का उद्घोष नहीं, बल्कि स्त्री के आत्मनिर्णय के अधिकार का स्पष्ट सामाजिक-राजनीतिक वक्तव्य है। मीरा का वैराग्य निष्क्रिय पलायन नहीं, बल्कि सक्रिय विद्रोह है, जिसने स्त्री को 'देह' नहीं बल्कि 'चेतना' के रूप में स्थापित किया।
उनके पदों में वर्णित भावनाएँ स्त्री की उस आकांक्षा को प्रकट करते हैं जिसमें वह स्वयं निर्णय लेती है कि उसे किससे प्रेम करना है, किन संबंधों को स्वीकार करना है और किन बंधनों को तोड़ना है। यही भाव उनकी सामाजिक-राजनीतिक चेतना का मूल है।

**विशिष्ट शब्द - प्रतिरोध , प्रेम, आत्मस्वीकृति ,आध्यात्मिक अभिव्यक्ति ,पितृ सत्तात्मक**

## प्रस्तावना

भारतीय भक्ति साहित्य में मीरा बाई का स्थान अनुपम है। वे केवल भक्त कवयित्री ही नहीं, बल्कि उस कालखंड की स्त्री चेतना, स्वतंत्रता और सामाजिक विद्रोह की जीवंत प्रतीक हैं। मीरा का जन्म 15 वीं सदी में राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र के मेड़तिया राजपरिवार में हुआ तथा उनका विवाह मेवाड़ के सिसोदिया महाराणा सांगा के के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से हुआ तथा विवाह कुछ समय बाद राजकुमार भोजराज की मृत्यु हो गई| – वह काल जब समाज कठोर धार्मिक रूढ़ियों, पितृसत्तात्मक नियंत्रण, जातिगत ऊँच-नीच और स्त्री की सामाजिक उपेक्षा से ग्रस्त था। स्त्री को परिवार और कुल-मर्यादा की सीमाओं में बाँध दिया गया था। उसकी भूमिका केवल पत्नी, बहू और माता के रूप में परिभाषित की गई थी। ऐसे युग में जब स्त्री की आवाज दबा दी जाती थी, मीरा का स्वर एक बिजली की तरह गूँजा – जिसने न केवल धार्मिक चेतना जगाई, बल्कि समाज की जकड़ी हुई संरचना को भी हिला दिया।मीरा की भक्ति सामान्य नहीं थी; यह एक विरोध का सांकेतिक स्वरूप थी। वे ईश्वर से प्रेम करती हैं, लेकिन यह प्रेम सांसारिक

या दासता वाला नहीं – यह आत्मस्वीकृति, स्वाधीनता और अस्तित्व की पहचान का प्रतीक है। उनका यह कहना कि *"माई म्हा गोविन्द गुण गास्या, राजा रूठ्या नगरी त्यागां ,हरि रूठ्या कठे जाण "*केवल ईश्वर-भक्ति नहीं है, यह सामाजिक और राजनीतिक नियंत्रण के विरुद्ध उद्घोष है। यह एक ऐसी स्त्री का वक्तव्य है जो अपने निर्णय स्वयं लेती है और अपने जीवन का मार्ग स्वयं चुनती है। यह स्वतंत्रता का जोश, यह आत्मनिर्णय का साहस ही मीरा की भक्ति को राजनीतिक और सामाजिक प्रतिरोध का रूप देता है।मीरा के जीवन का संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं था। उनके पति की मृत्यु के बाद समाज ने उन्हें विधवा जीवन की कठोर सीमाओं में बाँधना चाहा, लेकिन उन्होंने सभी बंधनों को तोड़कर संतों की संगति में भक्ति का मार्ग अपनाया। समाज ने उन्हें "बावरी", "अवज्ञाकारी" और "कुलकलंकिनी" कहा, किंतु मीरा ने यह सब स्वीकार कर लिया, इनका यह साहस उस युग की स्त्रियों के लिए प्रेरणा बना, जिसने स्त्री मुक्ति की चेतना को गहराई दी। इसीलिए मीरा का जीवन और काव्य दोनों भारतीय स्त्री विमर्श की जड़ें हैं।

## मीरा के पदों में नारी चेतना

मीरा के काव्य में नारी चेतना का स्वर अत्यंत गहरा, संवेदनशील और प्रखर है। नारी चेतना का अर्थ केवल स्त्री के दुख, पीड़ा या शोषण का चित्रण नहीं, बल्कि उसकी स्वतंत्र सत्ता, आत्मसम्मान और अस्तित्व पहचान से है| मीरा के पदों में नारी अपने दुख को विलाप में नहीं, बल्कि शक्ति में बदलती है। वे विषपान, अपमान और तिरस्कार झेलती हैं, परंतु टूटती नहीं।

*"जो विष दे सो पी लूँ मीरा, अमृत सम जाने।"*

यह केवल त्याग नहीं, बल्कि आंतरिक शक्ति का प्रतीक है। मीरा का यह भाव उस स्त्री का है जो अत्याचार सहते हुए भी अपने विचार और विश्वास से नहीं डगमगाती | मीरा का स्त्री दृष्टिकोण आध्यात्मिक भी है और सामाजिक भी। वे स्त्री को केवल भक्ति की पात्रा नहीं बनातीं, बल्कि उसकी स्वतंत्र सत्ता को पहचानती हैं। उनके लिए ईश्वर कोई पुरुष नहीं जो आदेश दे, बल्कि एक सहचर है – जिससे वे प्रेम करती हैं और हर कीमत पर वे प्राप्त करना चाहती है | वे डंके की चोट पर कहती है-

"रे माई म्हा लियो गोविन्दो मोल,
थें कह्यो छाने मैं कह्यो चवाड़े लियो बजंता ढोल,
रे माई मेतो लियो गोविन्दो मोल"|

मीरा के पदों मे नारी चेतना और विद्रोह के साथ करुणा, स्वतंत्रता के साथ प्रेम, और संवेदना के साथ संकल्प जुड़ा है। वे प्रेम को स्त्री की शक्ति बनाती हैं, कमजोरी नहीं। डॉ . बच्चनसिंह मीराबाई के पदों के विषय में लिखते है -"मीराबाई एक ओर सामंती आभिजात्य को एक झटके में तोड़ डालती हैं तो दूसरी ओर झटके उनकी रचनाओं में आभिजात्य का संयम दिखाई पड़ता है | प्रिय के प्रति उनका प्रेम सामान्य मानवीय मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता |" उनके पदों में नारी की आवाज को सामाजिक, आध्यात्मिक और अस्तित्वगत सभी स्तरों पर मान्यता

मिलती है।मीरा ने अपने जीवन के निर्णय स्वयं लिए। पति की मृत्यु के बाद सती होने से इनकार करना उस युग में अकल्पनीय साहस था|

"गिरधर गास्यां सती न होस्या
मन मोह्यो धन नामी"

मीरा द्वारा सती न होना और कृष्ण भक्ति को अपनाना ये मीरा का अद्भुत निर्णय था | मीरा ने न सती हुई न ही पुनर्विवाह नहीं किया, लेकिन उन्होंने विधवा जीवन को केवल त्याग और कष्ट में नहीं बिताया। उन्होंने अपने जीवन को सार्थक और आनंदमय बनाया, जो विधवाओं के लिए एक नया मार्ग था।।मीरा ने अपने पदों मे पति- पत्नी के पारम्परिक संबंधो को नकारते हुए कृष्ण को अपना सच्चा पति माना| वे कहती है-

"म्हारे तो  गिरधर गोपाल दूसरो न कोई,
जाके सिर मोर मुकट मेरो पति सोई "

जैसी पंक्तियों में  नारी की स्वतंत्र इच्छा और चयन का अधिकार प्रतिबिम्बित होता है मीरा का काव्य नारी मुक्ति का आदर्श प्रस्तुत करता है - ये मुक्ति केवल शारीरिक बन्धनों से ही नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी | मीरा ने राजमहल का वैभव त्यागकर भी अपना जीवन गरिमा के साथ जिया, यह आर्थिक स्वतंत्रता की चेतना को दर्शाता है। शिक्षा और ज्ञान की प्रतिमूर्ति मीरा की विद्वता उनके पदों में स्पष्ट है। उन्होंने संस्कृत, ब्रज और राजस्थानी भाषाओं में निपुणता प्राप्त की थी।सामाजिक परिवर्तन की दूत मीरा बाई मीरा आज भी करोड़ों स्त्रियों के लिए साहस, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान का जीवंत प्रतीक हैं, जो सिद्ध करती हैं कि नारी चेतना केवल आधुनिक युग की देन नहीं है। विश्वनाथ त्रिपाठी भी लिखते है कि " तुलसी क्या, कबीर और सुर की अपेक्षा भी मीरा का रचना-संसार सीमित है | किन्तु वह किसी की अपेक्षा कम विश्वसनीय नही है| |" मीराबाई का जीवन और काव्य परवर्ती नारी आंदोलनों के लिए प्रेरणा स्रोत बना | मीरा ने भक्ति को माध्यम बनाकर एक ऐसी क्रांति की शुरुआत की जिसके प्रभाव आज तक महसूस किए जा सकते हैं। उनके काव्य में निहित नारी चेतना आधुनिक नारीवादी आंदोलन की पूर्वपीठिका है। यद्यपि उनके समय में तत्काल कोई बड़ा सामाजिक परिवर्तन नहीं हुआ, लेकिन उन्होंने एक विचार बोया जो समय के साथ विकसित होता गया।

## मीरा बाई के पदों में  सामाजिक प्रतिरोध

मीरा का सामाजिक प्रतिरोध बहुआयामी है – यह जाति, कुल-मर्यादा, लिंग असमानता और धार्मिक ढोंग के विरुद्ध खड़ा है। मध्यकालीन समाज में स्त्री की स्थिति दोहरी गुलामी में थी – एक, पुरुषसत्ता की और दूसरी, धर्म और परंपरा की। मीरा ने इन दोनों का खुला विरोध किया | सबसे पहले उन्होंने कुल-मर्यादा और पारिवारिक नियंत्रण का त्याग किया। राजघराने की बहू होकर उन्होंने मंदिरों और संतों की संगति में रहना चुना। समाज ने इसे अपमानजनक समझा, किंतु मीरा ने अपने ईश्वर-प्रेम को किसी मर्यादा से बंधने नहीं दिया। वे कहती हैं –

"छाड़ दी कुल की कानी, कहा करे सो कोई?

संतन ढिंग बैठी बैठी, लोक लाज खोई "

मध्यकाल में जब स्त्री को कुल की इज्जत का प्रतीक माना जाता था, मीरा का यह कथन क्रांतिकारी था। वे स्त्री को परिवार की संपत्ति मानने वाली सोच को चुनौती दे रही है| वे कहती है-

*"सांवरिया संग प्रीत लगाई, जग लागे न भाए।"*

यहाँ "जग न भाए" सामाजिक अस्वीकृति का प्रतीक है। वे समाज की स्वीकृति की आकांक्षा नहीं रखतीं, क्योंकि उन्होंने अपने भीतर सत्य पा लिया है। यह एक ऐसी चेतना है जो समाज से स्वतंत्र होकर सोचती है, और यहीं से मीरा सामाजिक क्रांति की प्रतीक बनती हैं।मीरा का प्रतिरोध **जातिगत ऊँच-नीच** के विरुद्ध भी है। उन्होंने रैदास जैसे चर्मकार संत को अपना गुरु माना – यह उस समय के सामाजिक ढाँचे में असंभव था। एक क्षत्राणी का किसी 'अछूत' से आत्मिक संबंध स्थापित करना समाज के लिए विद्रोह से कम नहीं था। मीरा का यह निर्णय सामाजिक समानता का सशक्त उद्घोष था।मीरा के पदों में सामाजिक प्रतिरोध के साथ, धार्मिक पाखंडों के विरुद्ध भी प्रतिरोध देखा जा सकता है। उन्होंने भक्ति को किसी पुरोहित या विधि-विधान से नहीं जोड़ा, बल्कि सीधा, निर्भीक और व्यक्तिगत अनुभव बनाया। यह समाज में व्याप्त बाह्याचार पर सीधा प्रहार था| मीरा का सामाजिक प्रतिरोध सबसे अधिक तब उजागर होता है जब वे स्त्री की गुलामी को अस्वीकार करती हैं। वे विष पीती हैं, अपमान झेलती हैं, पर झुकती नहीं| वे कहती है -

"पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे,
मै तो नारायण सू ,आपही ही हो गई दासी रे,
*लोग कहैं मीरा भई रे बावरी, जाति कहे कुलनासी रे|"*

यह वाक्य एक ऐसे प्रतिरोध का प्रतीक है जिसमें व्यंग्य, साहस और आत्मविश्वास का अद्भुत संगम है। मीरा समाज की हँसी को अपनी ताकत बना लेती हैं। यह वही बिंदु है जहाँ भक्ति क्रांति बन जाती है और मीरा प्रेम में प्रतिरोध रचती है| डॉ. बच्चनसिंह भी प्रेम बावली मीरा के इस स्वच्छंद भाव को उनकी लोकप्रियता का हेतु मानते हुए कहते है कि " मीरा की लोकप्रियता का पहला कारण है ऊँचे राजकुल का त्याग करके साधुओं, संतो और भक्तों के बीच सामान्य जन के स्तर पर भक्ति भाव की अभिव्यक्ति; दूसरा कारण है - संप्रदाय निरपेक्षता और तीसरा कारण है ऐसी भाषा का प्रयोग जो लोक-जीवन में रची बसी थी |

## मीरा बाई के पदों में राजनीतिक प्रतिरोध

मीरा का राजनीतिक प्रतिरोध सामाजिक विद्रोह से भी गहरा है, क्योंकि यह सीधे सत्ता की संरचना को चुनौती देता है। वे चित्तौड़ के राणा परिवार की बहू थीं – एक ऐसा परिवार जहाँ स्त्री से अपेक्षा की जाती थी कि वह शालीन, मौन और आज्ञाकारी रहे। लेकिन मीरा ने उस सत्ता के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने न केवल राजघराने की मर्यादा को तोड़ा, बल्कि उस धार्मिक-राजनीतिक तंत्र को भी चुनौती दी, जिसमें धर्म सत्ता का उपकरण बन चुका था।

राजनीतिक दृष्टि से देखें तो मीरा का यह कहना –

*"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई"*

सत्ता के सभी प्रतीकों का अस्वीकार है। वे कहती हैं कि न राजा, न समाज, न कुल – केवल गिरधर ही उनका स्वामी है। यह घोषणा किसी भी सामंती व्यवस्था के लिए क्रांतिकारी है। मीरा का यह विद्रोह सीधे पुरुषसत्तात्मक राजसत्ता पर प्रश्नचिह्न लगाता है।मीरा का राजनीतिक प्रतिरोध अहिंसक और आध्यात्मिक है, पर उसका प्रभाव गहरा है। उन्होंने हिंसा या विद्रोह का रास्ता नहीं अपनाया, बल्कि सत्य और प्रेम की शक्ति से सत्ता की नींव हिलाई। उनका यह प्रतिरोध "सत्याग्रह" के समान था – जो बाद में गांधी के विचारों में भी झलकता है। मीरा का जीवन यह सिखाता है कि असत्य के विरुद्ध खड़े होने के लिए तलवार की नहीं, सत्य के विश्वास की आवश्यकता है।मीरा की भक्ति में राजनीतिक अर्थ भी निहित हैं। उन्होंने अपने काव्य में ऐसी भाषा का प्रयोग किया जो दरबार या धर्मगुरुओं की भाषा नहीं थी, बल्कि जनता की थी – लोकभाषा, राजस्थानी और ब्रज का मिश्रण। इससे उनका संदेश जनमानस तक पहुँचा और यह राजनीतिक रूप से भी जन-जागरण का कार्य करने लगा।उनका विषपान-प्रसंग राजनीतिक षड्यंत्र का प्रतीक है। सत्ता उन्हें समाप्त करना चाहती थी, पर वे जीवित रहीं।वे कहती है -

विस का प्याला राना भेज्या ,पीवत मीरा हांसी
मीरा के प्रभु गिरधर नगर, सहज मिले अविनासी |

मीरा को जहर देकर मारने के प्रयास की कथा चाहे ऐतिहासिक हो या प्रतीकात्मक, यह इस सत्य को स्थापित करती है कि आत्मबल और नारी शक्ति किसी भी राजनीतिक हिंसा से बड़ी होती है।मीरा का राजनीतिक प्रतिरोध इस तथ्य में भी निहित है कि उन्होंने स्त्री को सत्ता के अधीन नहीं रहने दिया। उनके काव्य में स्त्री 'शक्ति' है, 'अनुगामी' नहीं। उन्होंने समाज को यह सिखाया कि प्रेम, भक्ति और सत्य के माध्यम से भी सत्ता के अहंकार को परास्त किया जा सकता है। मीरा कहती हैं कि यदि समाज विष भी दे, तो वे उसे अमृत मानकर स्वीकार करेंगी। यह पद मीरा की आध्यात्मिक शक्ति और दृढ़ता को दर्शाता है। वे हिंसा और अत्याचार को प्रेम और भक्ति से जीतती हैं। यह *अहिंसक प्रतिरोध* का सर्वोच्च उदाहरण है। मीरा बाई राजपरिवार की बेटी और बहू होते हुए भी शाही सुखों को त्यागने में बिल्कुल नहीं हिचकती और महाराणा को स्पष्ट कह देती कहती है -

"नाही भावे राणा जी थारों देसड़ो रंग रुड़ो
थारा देश में राणा साध नहीं छे , लोग बसे कुडो" |

यह पद मीरा की निर्भीकता का अद्भुत उदाहरण है। वे सीधे राणा (संभवतः राणा सांगा के उत्तराधिकारी महाराणा विक्रमादित्य ) को संबोधित करते हुए उनके राज्य की आलोचना कर रही हैं। एक राजपरिवार की स्त्री का राजसत्ता को इतनी खुली चुनौती देना अभूतपूर्व साहस है। यह पंक्ति दर्शाती है कि मीरा किसी सत्ता से भयभीत नहीं हैं। मीराबाई कहती है -

"राणाजी थें क्याने राखो मान्सू वैर
थे तो राणा म्हाने इसड़ा लागो ज्यों वृछ्न मे कैर"

मीरा के इस पद में उनकी पीड़ा, आक्रोश और गहरा व्यंग्य एक साथ मुखरित होता है। "राणाजी थें क्याने राखो मान्सू वैर" अर्थात् "हे राणाजी! मैंने आपका क्या बिगाड़ा है कि आप मुझसे इतना वैर (शत्रुता) रखते हैं?" - इस प्रश्न में मीरा की निर्दोषता और असहायता का भाव है। वे राणा से सीधे प्रश्न कर रही हैं कि उनके प्रति इतनी क्रूरता और उत्पीड़न का क्या कारण है। यह केवल एक प्रश्न नहीं, बल्कि उस पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है जो स्त्री की स्वतंत्रता को सहन नहीं कर सकती। दूसरी पंक्ति "थे तो राणा म्हाने इसड़ा लागो ज्यों वृक्ष में कैर" अर्थात् "हे राणा! आप मुझे ऐसे खटकते हैं जैसे वृक्ष में कांटा" - और भी अधिक तीखी है। यहाँ मीरा राणा की तुलना कांटे से कर रही हैं जो उनके जीवन रूपी वृक्ष में चुभता रहता है। यह उलटबांसी का सुंदर प्रयोग है - सामान्यतः राणा को मीरा कांटे की तरह खटकती थीं, लेकिन मीरा कहती हैं कि वास्तव में राणा उन्हें कांटे की तरह चुभते हैं। इन पंक्तियों में मीरा का वह दर्द व्यक्त होता है जो राजपरिवार के दमन, प्रताड़ना और विष देने जैसे प्रयासों से उन्हें झेलना पड़ा। साथ ही यह पंक्तियाँ उस सामाजिक व्यवस्था पर भी प्रहार हैं जहाँ स्त्री का अपना व्यक्तित्व, अपनी पसंद और अपना आध्यात्मिक मार्ग चुनना अपराध माना जाता था। मीरा की इस साहसिक अभिव्यक्ति में विद्रोह का स्वर तो है ही, साथ ही एक आत्मविश्वास भी है कि वे अपनी भक्ति में सही हैं और राणा का विरोध अन्यायपूर्ण है। यह पद दर्शाता है कि मीरा ने न केवल सामाजिक बंधनों को तोड़ा बल्कि राजसत्ता को भी सीधे चुनौती देने का साहस दिखाया। मीराबाई के विषय मे मैनेजर पाण्डेय के उद्‌गार इस प्रकार है " मीरा की कविता में सामन्ती समाज और संस्कृति की जकड़न से बैचेन स्वर को मुखर अभिव्यक्ति मिली | उनकी स्वतंत्रता की आकांक्षा जितनी आध्यात्मिक है, उतनी ही सामाजिक भी|"

## उपसंहार

मीरा के पदों में नारी चेतना और सामाजिक-राजनीतिक प्रतिरोध केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि दार्शनिक, नैतिक और सांस्कृतिक आंदोलन है। उन्होंने अपने जीवन और काव्य के माध्यम से यह सिद्‌ध किया कि भक्ति केवल भगवान से प्रेम नहीं, बल्कि अन्याय, असमानता और दमन के विरुद्‌ध खड़ी चेतना है। मीरा ने पितृसत्ता, सामाजिक रूढ़ियों और राजनीतिक दमन का विरोध अपने प्रेम और विश्वास की शक्ति से किया।उनका जीवन भारतीय स्त्री के इतिहास में एक ऐसी मशाल है जो सदियों से नारी स्वतंत्रता का मार्ग प्रकाशित कर रही है। मीरा का यह स्वर आज भी नारी अस्मिता, समानता और आत्म-सम्मान की प्रेरणा देता है। उनके पदों में भक्ति, विद्रोह और प्रेम – तीनों का अद्‌भुत समन्वय है। यही कारण है कि मीरा केवल संत कवयित्री नहीं, बल्कि भारतीय समाज में स्त्री मुक्ति की प्रथम स्वाधीन आवाज हैं।

**संदर्भ सूचि**

1. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास , राधाकृष्ण प्राइवेट लिमिटेड , दिल्ली ,16वां संस्करण जुलाई २०२२ पृष्ठ संख्या 134

2. विश्वनाथ त्रिपाठी ,मीरा का काव्य ,वाणी प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1989, पृष्ठ सं. 69
3. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास , राधाकृष्ण प्राइवेट लिमिटेड , दिल्ली ,16वां संस्करण जुलाई २०२२ पृष्ठ संख्या 135
4. संपादक पल्लव - मीरा : एक पुनर्मूल्यांकन , मैनेजर पाण्डेय द्वारा लिखित लेख मीरा की कविता और मुक्ति की चेतना, पृष्ठ संख्या 117 ,118